पश्चिमी तूफ़ान को रोकने का रास्ता

उस समस्या का हल, चाहे वो कितना मुश्किल नज़र आ रहा हो और सब्र को आज़माने वाला और लम्बा हो, इसके सिवा कुछ नही कि इस शिक्षा प्रणाली को नये तरीक़े से ढ़ाला जाए और उसको उम्मते् मुस्लिमा के अक़ीदे, ज़िन्दगी की उद्देश्य और आवश्यकता के अनुसार बनाया जाए और उसके सभी हिस्सों से भौतिकता, खुदा से सरकशी, अख़लाक व रूहानी मूल्यों से बग़ावत और जिस्म व ख़्वाहिश की परसतिश से निकाल कर पूरी मानवता पर शफ़क़त की रूह इसमे जारी व सारी कर दी जाए, इस उद्देश्य के लिये ज़बान व अदब से लेकर फ़लसफ़ा और मनोविज्ञान तक, और समाजवाद से लेकर आर्थिकवाद केवल एक रूह पैदा करना होगी, पश्चिम के दिमागी अधिपत्य और तिलिस्म का समापन करना होगा उसके अधिपत्य व इमामत का इनकार करना पड़ेगा उसके इल्मों व विचारों, इल्मी निरीक्षण और खुली तन्क़ीद का लगातार और जुर्रतमन्दाना रद्देअमल जाहिर करना होगा और ये साबित करना होगा कि पश्चिम की कामयाबियों और पेश कदमियों ने मानवता और सभ्यता को कितना बड़ा नुक़सान पहुंचाया है।

इसके ज्ञानों के साथ कच्चे माल का सा मामला करना होगा और उससे वो चीज़े तैयार करनी होंगी जो उन कौमों और मुल्को की अपनी ज़रूरतों, रूझानातों और उनके अक़ीदे व तहज़ीब से जुड़े हों।

इस राह मे जबकि बहुत से रोड़े हैं और परिणाम भी बहुत देर से ज़ाहिर हो सकते हैं लेकिन नवीनीकरण, स्वतन्त्र विचार और पश्चिम की दिमाग़ी गुलामी की इस तूफ़ानी मौज को रोकने का यही एक तरीक़ा है।

हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी रह०